अनुबोधन, खण्ड 2, अंक 1, मार्च 2026, पृष्ठ 116–120
ISSN: 3049-4184 (प्रिन्ट), 3108-1185 (ऑनलाइन)
https://doi.org/10.65885/anubodhan.v2n1.2026.012

जेम्स मिल का प्राचीन भारतीय इतिहास लेखन

अंकुश गुप्ता*

प्राप्तिः 16 मार्च 2026 / स्वीकृतः 24 मार्च 2026 / प्रकाशितः 31 मार्च 2026
जर्नल वेबसाइटः https://anubodhan.org

सारांश

साम्राज्यवादी ब्रिटेन ने जब भारत को अपना उपनिवेश बनाया तो अपनी साम्राज्यवादी शोषणकारी नीतियों को सही साबित करने के लिए व दीर्घकालीन शासन व्यवस्था को बनाए रखने के लिए उसने अपने प्रशासनिक तंत्रों और धर्माचार्यों व पादरीयों आदि सभी का प्रयोग किया। इस प्रयोग में भारत पर ब्रिटेन के शासन को सही साबित करने में ब्रिटिश लेखकों व इतिहासकारों के प्रयास सर्वाधिक महत्वपूर्ण साबित हुए। माउंटस्टुअर्ट एलफिंस्टन, विसेंट आर्थर स्मिथ, ई. जे. रैप्सन, जेम्स मिल आदि ब्रिटिश लेखकों ने अपने भ्रामक लेखन के माध्यम से यह बताने का प्रयास किया कि भारत प्राचीन काल से ही बाहर से आई जातियों से शासित होता रहा है इसलिए भारत पर ब्रितानी शासन सही है। उन्होंने यहां की धर्म-दर्शन, संस्कृति, सामाजिक व्यवस्था, ज्ञान, विज्ञान, कला, शासन, प्रशासन व शिक्षा के स्व को मिटाने का सुनियोजित प्रयास किया। इस प्रकार के भ्रामक मतों का विरोध अपने स्व से परिचित भारतीय विद्वानों ने सदैव ही किया है। इन सभी ब्रिटिश लेखकों में जेम्स मिल का लेखन भारतीय इतिहास व स्व के विरोध में सर्वाधिक प्रचलित व प्रभावी हुआ। जेम्स मिल ने सबसे पहले भारतीय इतिहास व संस्कृति की निरंतरता पर प्रहार करते हुए इसे तीन भिन्न-भिन्न हिंदू, मुस्लिम व ब्रिटिश काल खंडों में विभाजित कर दिया। इन तीनों ही कालों की मूल भावना एक दूसरे से बिल्कुल विपरीत थी, जिनमें प्रथम के दो काल हिंदू व मुस्लिम धर्म के आधार पर विभाजित थे। इस प्रकार के काल विभाजन से जेम्स मिल यह बताना चाहता था कि भारत के

*शोध छात्र, प्राचीन भारतीय इतिहास, संस्कृति एवं पुरातत्त्व विभाग, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी
ई-मेल: ankushguptaphd@bhu.ac.in

प्रारंभिक इतिहास के शासक धर्म आधारित व भेदभाव पूर्ण शासन करते थे जबकि उपनिवेश काल को उसने ब्रिटिश काल कहकर यह दिखाने का प्रयास किया कि ब्रिटेन भारत को आधुनिक व सभ्य बनाने के लिए धार्मिक भेदभाव से रहित शासन कर रहा है। इस प्रकार जेम्स मिल के इतिहास लेखन ने भारतीय इतिहास व संस्कृति की निरंतरता व सामंजस्य को क्षत-विक्षत कर दिया।

कूट शब्द: जेम्स मिल, भारतीय इतिहास, इतिहास लेखन, औपनिवेशिक विमर्श, प्राचीन भारत, ब्रिटिश इतिहास लेखन इत्यादि

व्यापार के उद्देश्य से भारत आए ब्रिटिश व्यापारियों ने जब भारतीयों पर आंशिक राजनीतिक प्रभुता स्थापित कर ली तो उन्होंने पाश्चात्य शिक्षा और ईसाईमत द्वारा भारत में सामाजिक धार्मिक परिवर्तन लाने की कवायद भी शुरू कर दी। अंग्रेज लेखकों व विद्वानों का दो वर्ग भारतीय ज्ञान-विज्ञान परंपरा का अपने निहित स्वार्थ के लिए अध्ययन कर रहा था। प्रथम वर्ग के विद्वान भारतीय इतिहास, संस्कृति, साहित्य व भाषा के अध्ययन द्वारा भारतीय ज्ञान विज्ञान परंपरा को उद्घाटित करने में रुचि ले रहे थे जबकि दूसरा वर्ग भारतीय समाज को आदिम व असभ्य बताकर तथाकथित सभ्य अंग्रेजों द्वारा भारतीयों को सभ्य बनाने का अनुमोदन कर रहे थे। औपनिवेशिक सरकार भारत के प्रति कैसी नीतियां अपनाएं इस संबंध में भी विद्वानों के तीन प्रमुख वर्ग थे। प्रथम सहानुभूतिशाली वर्ग (जेम्स प्रिंसेप), दूसरा ईसाई प्रचारक वर्ग (सर जॉन शोर, चार्ल्स ग्रांट), तीसरा उपयोगितावादी वर्ग (जेम्स मिल)। शोर व ग्रांट जैसे अंग्रेज ईसाई मिशनरियों के माध्यम से भारतीय शिक्षा व धर्म परिवर्तन द्वारा भारतीय समाज में परिवर्तन लाना चाहते थे।[1] उपयोगितावादी वर्ग शासन और कानून पर बल देकर भारतीय समाज में परिवर्तन लाना चाहता था।

विलियम जोन्स मानते थे कि अतीत में हिंदुओं की सभ्यता श्रेष्ठ थी परंतु जेम्स मिल इसे नकारते थे।[2] अन्य ब्रिटिश प्रशासकों की तरह जेम्स मिल भी अनुभव करते थे कि भारत पर स्थाई शासन करने के लिए अंग्रेजों को भारतीय सभ्यता का पर्याप्त ज्ञान अर्जित करना चाहिए। जेम्स मिल ने भारतीय उपनिवेश की ओर ब्रिटेन की जनता में रुचि उत्पन्न करने की आवश्यकता महसूस की और छह खंडों में "हिस्ट्री ऑफ ब्रिटिश इंडिया" नामक पुस्तक की रचना की। परंतु आधुनिक इतिहासशास्त्र के कतिपय सिद्धांतों की जेम्स मिल ने उपेक्षा कर दी।[3] इतिहास में वस्तुनिष्ठता और प्राथमिक स्रोतों का अत्यधिक महत्व होता है परंतु उपयोगितावादी दर्शन के सिद्धांतो से ग्रसित मिल कभी वस्तुनिष्ठ नहीं हो पाए तथा कभी भी भारत न आने के कारण उन्होंने किसी भी प्राथमिक स्रोत का इस्तेमाल अपने इतिहास लेखन में नही किया। आधुनिक भारत के इतिहासकारों में पाश्चात्य विद्वानों ने बौद्धिक जिज्ञासा के कारण भारत के अतीत पर ध्यान देना शुरू किया ना कि अनुशासित इतिहासज्ञों के रूप में।[4]

जेम्स मिल का जन्म स्कॉटलैंड के एक साधारण मोची परिवार में 1773 ई में हुआ था। जेम्स मिल की शिक्षा-दिक्षा एडिनबरा में हुई थी। जेम्स मिल मुख्य रूप से एक ब्रिटिश अर्थशास्त्री और दार्शनिक थे। भारत के बारे में लिखने से पूर्व ही वह एक स्थापित लेखक व विद्वान थे। मिल

ईस्ट इंडिया कंपनी के इंडिया हाउस, इंग्लैंड के कर्मचारी थे। मिल ने 1806 ई में "हिस्ट्री ऑफ ब्रिटिश इंडिया" नामक पुस्तक पर कार्य करना प्रारंभ किया और 1818 ई में कुल 6 खंडों में इस कृति का प्रकाशन हुआ। औपनिवेशिक दुराग्रह से ग्रसित मेकॉले ने ग्रंथ को महत्वपूर्ण बताते हुए इसका स्वागत किया। पुस्तक को भारत के इतिहास के लिए एक मानक ग्रंथ मान लिया गया और तत्कालीन विश्वविद्यालयों में पाठ्यपुस्तक के रूप में स्वीकार कर लिया गया।

जेम्स मिल ने लगभग 12 वर्ष "हिस्ट्री ऑफ ब्रिटिश इंडिया" को लिखने में लगाया। इस अवधि में व बाद में भी जेम्स मिल ने कभी भारत की यात्रा नहीं की। जेम्स मिल भारतीय रीति-रिवाजों व परंपराओं तथा किसी भी भारतीय भाषा से भी परिचित नहीं था। उसने केवल भारतीयों पर ब्रिटिश शासन की उपयोगिता स्थापित करने के लिए ही छह खंडों में "हिस्ट्री ऑफ ब्रिटिश इंडिया" लिखी।[5]

जेम्स मिल इस पुस्तक के प्रकाशन से धन कमाना चाहते थे क्योंकि गिब्बन और रॉबर्टसन जैसे लेखकों ने इतिहास पर लिखकर पर्याप्त धन अर्जन किया था। चूंकि जेम्स मिल इंडिया हाउस के कर्मचारी थे इसलिए इंडिया हाउस में महत्वपूर्ण पद प्राप्त करने के लिए भी हो सकता है मिल ने इस पुस्तक को लिखा हो।

"हिस्ट्री ऑफ ब्रिटिश इंडिया" पुस्तक में जेम्स मिल ने भारत के आरंभिक काल से लेकर 18 वीं शताब्दी के अंत तक का इतिहास लिपिबद्ध किया है। इस पुस्तक के लेखन में जेम्स मिल ने अत्यधिक हिंदू विरोधी दृष्टिकोण अपनाया है विशेषतया प्राचीन भारतीय इतिहास को लिपिबद्ध करने में। जिन यूरोपीय विद्वानों ने हिंदू सभ्यता या संस्कृति के बारे में प्रशंसात्मक लिखा था, उन सभी के दृष्टिकोणों का जेम्स मिल ने केवल खंडन ही नहीं किया बल्कि उन पर यूरोपियनो की निगाहों में हिंदुओं को ऊंचा उठाकर सरकार की गतिविधियों को बाधित करने का भी आरोप लगाया।[6]

जेम्स मिल ने हिंदुओं को मुसलमानों और यूरोपियनो से निम्नतर समझा। मिल का मानना था कि हिंदू कभी भी ऐसी तथाकथित सभ्यता में नहीं रहे और ना ही उन पर संकट की ऐसी कोई घड़ी आई जिससे वे अज्ञानता और बर्बरता की दशा में पहुंच गए। वह हिंदू संस्थाओं और परंपराओं को निर्बल और असभ्य मानते थे।[7]

उपर्युक्त तथ्यों से स्पष्ट होता है कि जेम्स मिल को हिंदुओं के बारे में कुछ भी जानकारी नहीं थी। हिंदू संस्कृति में वेद, उपनिषद, ब्राम्हण, अरण्यक, पुराणों जैसी अगणित समृद्ध साहित्य की रचना होती है। हिंदू संस्कृति में गणित, रसायन, खगोल व ज्योतिष तथा आयुर्वेद व शल्य चिकित्सा जैसी वैज्ञानिक विधाओं का विकास होता है। हिंदू मंदिर व नगर तकनीकी के सर्वोत्कृष्ट उदाहरण प्रस्तुत करते हैं। इन सब के बावजूद भी अगर जेम्स मिल हिंदुओं को मुसलमानों और यूरोपियनो से निम्न पर समझते थे तो यह उनके दुर्भावना व पूर्वाग्रहों से युक्त मानसिकता के कारण ही थी। मिल के बताए अनुसार हिंदू संस्थाएं व परंपराएं निर्बल होती तो रोम, मिश्र व

यूनान की तरह भारतीय संस्कृति का भी लोप हो गया होता परंतु हिंदू संस्कृति अभी भी निरंतर व जीवंत है।

सी. एच. फिलिप्स[8] का मानना है कि हिंदू संस्कृति पर मिल के विचार अज्ञानता और पूर्वाग्रह पर आधारित थे।

डॉ बी. एन. पुरी[9] लिखते हैं जेम्स मिल उन तथ्यों पर भरोसा करके, जो सतही व पूर्वाग्रह युक्त थे और जिनके उपयोग में मिल अत्यधिक चयनात्मक थे, तथा प्राथमिक स्रोतों पर आधारित ज्ञान के अभाव में क्योंकि वह कभी भारत नहीं आए, एक कलंकित भारतीय समाज का खाका खींचते हैं जिसके ईलाज के लिए वह उपयोगितावादी सिद्धांतों पर आधारित सरकार व कानून बनाने की सलाह देते हैं।

डंकन फोर्ब्स[10] का मानना था कि 1806 ई में जब मिल ने भारतीय इतिहास पर लिखना शुरु किया उस समय इंग्लैंड में सरकार व चर्च पर आरोप लगाना नामुमकिन था अतः उसने हिंदू धर्म पर आरोप लगाकर इंग्लैंड की संस्थाओं को कमतर दिखाने का आसान रास्ता पाया।

प्रो. एच. एच. विल्सन[11] ने जेम्स मिल के पुस्तक के चौथे संस्करण का संपादन किया था और अपने संपादकीय में कहा था कि मिल में बहुत ही ज्यादा अपूर्ण ज्ञान था। हिंदू विरोधी सभी तथ्यों में मिल का स्पष्टतः विश्वास था। जेम्स मिल ने हिंदुओं की छवि को ऐसा चित्रित किया है जिसका वास्तविक हिंदू से कोई मेल नही होता है और जिससे मानवता प्रायः क्रुद्ध हो जाती है। विल्सन ने यह भी कहा है कि मिल ने हिंदू संस्कृति के ऊपर मुस्लिम संस्कृति की श्रेष्ठता का कोई प्रमाण तक प्रस्तुत नहीं किया है।

जेम्स मिल की दृष्टि से भारत की संस्कृति और इतिहास की छवि अत्यधिक निम्न स्तर की है। इसलिए उसे ब्रिटिश तर्कशीलता तथा उपयोगितावाद से सींचने की ज़रूरत थी। इस संकल्पना ने औपनिवेशिक शासन को न्यायोचित ठहराया। भारतवासी स्वविकास के योग्य नहीं, अतः उनके लिए विदेशी शासन ही उचित है। इस प्रकार, मिल ने भारतीय गौरव को अवमूल्यित किया और ब्रिटिश शासन को उसके सुधारक के रूप में दिखाया। वर्तमान में भारतीय राष्ट्रीयतावाद और उपनिवेशातीत विमर्श से औपनिवेशिक लेखनों की नकारात्मकता को चुनौती दी जा सकती है। आधुनिक अध्ययनों से यह स्पष्ट होता है कि प्राचीन भारत में भी उच्चतम विज्ञान, कला और प्रशासनिक कौशल विकसित था।

जेम्स मिल मूलतः एक उपयोगितावादी दार्शनिक थे। उपयोगितावादी दर्शन विचारों व नैतिकता की अपेक्षा वर्तमान सुख समृद्धि व भौतिक उपलब्धियों को ज्यादा महत्वपूर्ण मानता है। भारत एक चिंतनशील व आध्यात्मिक देश है इसलिए जेम्स मिल को हिंदुओं की उपलब्धियां नहीं दिखाई पड़ी। उपयोगितावादी विचारों के पूर्वाग्रह में जकड़े हुए जेम्स मिल इतिहास लेखन के क्रम में वस्तुनिष्ठता भूल गए। इस प्रकार हम देखते हैं कि जेम्स मिल के इतिहास लेखन में भारतीय इतिहास व स्व का पूर्ण विकृतिकरण करने का प्रयास स्पष्टतया दिखलाई पड़ता है।

संदर्भ

1. Philips, C.H. (1961); James Mill, Mountstuart Elphinstone, and the History of India, द्वारा संकलित Philips, C.H. (ed.); Historians of India, Pakistan and Ceylon, Oxford University Press, London, 1961, pg. 218.
2. Puri, Dr. B.N. (1994); Ancient Indian Historiography, Atma Ram & Sons, Delhi, pg. 132-133.
3. भारद्वाज, डॉ. प्रवेश (2011); भारत के इतिहासकार, भाग – 3 (अट्ठारहवीं शताब्दी से आज तक), विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी, पृ. xiv
4. वही।
5. वही, पृ.369।
6. वही, पृ.369।
7. श्रीधरन, ई. (2016); इतिहास–लेख: एक पाठ्यपुस्तक, ओरियंट ब्लैकस्वान प्राइवेट लिमिटेड, नई दिल्ली, पृ. 366।
8. Philips, C.H. (1961); James Mill, Mountstuart Elphinstone, and the History of India, द्वारा संकलित Philips, C.H. (ed.); Historians of India, Pakistan and Ceylon, Oxford University Press, London, 1961, pg. 221.
9. Puri, Dr. B.N. (1994); Ancient Indian Historiography, Atma Ram & Sons, Delhi, pg.133.
10. Forbes, Mr. Duncan (1951); James Mill and India, The Cambridge Journal, London उद्धृत द्वारा Philips, C.H. (1961); James Mill, Mountstuart Elphinstone, and the History of India, द्वारा संकलित Philips, C.H. (ed.); Historians of India, Pakistan and Ceylon, Oxford University Press, London, 1961, pg. 219.
11. Mill, James (1968); The History of British India, Chelsea House Publishers, New York [Notes by Horace Hayman Wilson, pg. vii-xiv]

Copyright © 2026 Author(s). Published by Siri Research Foundation. This is an open access article distributed under the Creative Commons Attribution International License (CC BY 4.0).